घोघरडीहा प्रखंड स्वराज्य विकास संघ जगतपुर,मधुबनी,बिहार

मेघ पाईन अभियान

डाक्टरों के द्वारा लाईलाज पेट का बिमारी मटका फिल्टर के पानी से ठीक

केस स्टडी वर्ष 2010

श्री दुखी राम
पिता–स्व0 लुचाई राम ,
उम्र 60 वर्ष
ग्राम–बलियारामटोल, पंचायत–बलिया,
प्रखंड–लखनौर ,जिला–मधुबनी,
परिवार के सदस्य सं0
पुरूष 7 महिला–2 कुल–9

गॉव की स्थिति

कमला नदी तट परबसे यह गॉव प्रत्येक वर्ष किसी न किसी आपदा जैसे बाढ़–सुखाड़ इत्यादि से प्रभावित होती आई है जिससे यहॉ का जिविका मुख्य रूप से प्रभावित होती है। यहॉ कृषि का समाप्ति हो जाना ,पीने के लिए शुद्ध जल की कमी, पशु के लिए चारा का अभाव मुख्य समस्या बन जाती है। बाढ़ बार–बार आने से यहॉ का पानी पुर्णतया दूषित हो गया है जो पानी जॉच के दौरान पता चला है। दूषित पानी के प्रयोग से यहॉ के बच्चा एवं गर्भवती महिला कुपोषण के कारण विमार रहता है तथा जलजनित बिमारी से भी अधिक लोग परेशान रहते हैं।

उद्देश्य

समग्र जल प्रबंधन के द्वारा जनचेतना के माध्यम से शुद्ध जल का प्रयोग के लिए व्यवहारिक रणनीति तैयार करना।

चुनौती

दूषित जल सेवन करने तथा पूर्व में अपनाये गये कुऑ एवं तालाब के पानी के बारे में विभिन्न भ्रांतियॉ फैलने के कारण मनुष्य का चापाकल के प्रति आकर्षण के बिच वर्षा जल की शुद्धता,मटका फिल्टर का प्रयोग,कुऑ का प्रयोग एवं तालाब का प्रयोग के बारे में विश्वास दिलाना एवं उपयोग में समानता लाना।

प्रयास एवं परिणाम

मेघ पाईन अभियान तथा जी पी एस भी एस के द्वारा वर्ष 2007 में समग्र जल प्रबंधन के तहत जब इस पंचायत में कार्यक्रम शुरू किया गया तो दुखी राम को यहॉ के ग्रामीण ने ग्राम समिति का अध्यक्ष बनाया। जब बैठक में शुद्ध जल पर चर्चा चल रहा था तो बताया जा रहा था कि इस क्षेत्र में चापाकल का पानी दूषित है एवं इसका उपाय एव दूषित पानी पीने से कैसे बचाव किया जा सकता है उस समय दखी राम अपने तीन साल से पिड़ित पेट दर्द,गैस्ट्रीक,जलन,डायरिया के बात एम पी ए के कार्यकर्त्ता को बताया तथा इसका उपाय के बारे में चर्चा किया जिसमें इन्हें मासिक 400 से 500 रूपये खर्च होता था इलाज से तत्काल सुधार होता था परन्तु फिर यह बिमार पर जाता था । शरीर से काफी कमजोड़ हो गया था। फिर एम पी ए के कार्यकर्त्ता द्वारा इनके चापाकल का पानी जॉच किया। जिसमें काली फॉस,आयरण 3.0 अमोनिया 2.0 तथा अन्य हानिकारक तत्व भी पाया गया। एम पी ए के कार्यकर्त्ता ने इन्हें अविलम्ब मटका फिल्टर लाने का सलाह इनके पुत्र गंगा राम जी को दियां दूसरे दिन गंगा रामजी 100 रूपये में मटका फिल्टर का सेट लाये तथा एम पी ए के कार्यकर्त्ता को बुलाकर इसकी संचालन एवं रखरखाव संबंधी जानकारी लिया। फिर मटका फिल्टर कार्यकर्त्ता के सामने स्वयं जाली,कोयला,गिट्टी एवं बॉस इत्यादि देकर सेट किया तथा पूरे भरोसा के साथ इसका पानी पीना शुरू किया, धीरे–धीरे 3 माह के अन्दर इनका पेट का बिमारी ठीक हो गया तथा यह डाक्टर का लिखा दवा भी खाना बंद कर दिया यह सभी को बताया कि जीस बिमारी में हमने मासिक 400 से 500 रूपया दवा में खर्च करने के बाद भी डाक्टर ठीक नहीं कर सका वह बिमारी सिर्फ 100 रूपया के मटका फिल्टर लगाने से ठीक हो गया। आज यह पूरे परिवार सालोभर मटका फिल्टर का पानी प्रयोग करते हैं तथा अपने पास पड़ोसियों को भी मटका फिल्टर लगवाने का सलाह देते हुए कहते हैं कि यदि बिमारी में खर्च होने बाले पैसे बचत करना है तो मटका फिल्टर लगाओ जो शुद्ध जल का सबसे सस्ता एवं अच्छा श्रोत है। इन्होंने अपने बातों से समझाकर करीब 20 मटका फिल्टर लगवा चुके हैं तथा सभी इसका उपयोग कर रहे हैं।

सीखः–

1. शुद्ध जल का प्रयोग से पेट संबंधी विभिन्न रोगों बचा जा सकता है तथा आर्थिक बचत भी किया जा सकता है ।
2. दूषित पानी पीने से जल जनित 80 प्रतिशत खासकर पेट संबंधी रोग होते हैं।
3. दूषित जल से होने वाले शारीरिक,मानसिक एवं आर्थिक हानि की जानकारी
4. जल की शुद्ध करने की विधि की भी जानकारी ।